रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –1 ● कानपुर 1 से 15 जनवरी 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

2017 में लक्ष्य पाना ही है – डा0 इदरीसी

वर्ष 2017 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जो लक्ष्य हमने निर्धारित किया है उसे हर हाल में पाना ही होगा, इसके लिये चाहे जितने भी प्रयास मुझे व मेरे साथियों को करना पड़े वह प्रयास हम सब मिलकर करेंगे लक्ष्य प्राप्ति ही वर्ष 2017 की हमारी प्रथम प्राथमिकता है यह उदगार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष व बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0एच इदरीसी ने वर्ष 2016 में हुये कार्यों की समीक्षा बैठक में व्यक्त किये।

डा0 इदरीसी ने कहा कि वर्ष 2016 के लिये हमने जो लक्ष्य निर्धारित किये थे उन्हें पूरे तौर पर नहीं प्राप्त कर सके परन्तु संतोष इस बात का है कि लक्ष्य के प्राप्ति के लिये पूरी ईमानदारी के साथ प्रयास किये गये, हम लक्ष्य के करीब तक पहुँचे और अब जो कुछ भी नहीं पा पाये वह वर्ष 2017 में अवश्य प्राप्त करेंगे, हम इस बात से संतुष्ट नहीं हो सकते कि जो कुछ भी मिला है वही काफी है अपितु हमारी संतुष्टि निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति से ही होगी डा0 इदरीसी ने कहा कि लक्ष्य तक हम क्यों नहीं पहुँच सके ?इस पर गंभीरता से चिन्तन किया जायेगा और जो कमियां हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करेंगे, लक्ष्य की प्राप्ति में सभी का सहयोग आवश्यक है हमें अपने बोर्ड के साथियों का व कार्यकर्ताओं का अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ है परन्तु चिकित्सकों के द्वारा जो सहयोग मिलना चाहिये वह नहीं मिल पा रहा है यह हमारे लिये चिन्ता का नहीं वरन विचारणीय विषय है क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ–साथ इस विधा के चिकित्सकों को स्थापित करवाने के लिये ही है इसलिये जिसके लिये प्रयास किया जा रहे हैं उन्हीं की सहभागिता नहीं हो तो बात चिन्तन की बनती है। शासकीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करवाने के लिये जो प्रयास बोर्ड द्वारा किये गये हैं उसमें अधिकांश में शत्–प्रतिशत सफ़लता प्राप्त हो चुकी है और जो एक आधे प्रकरण लम्बित हैं उनका भी निस्तारण शीघ्र ही हो जायेगा चिकित्सकों के पंजीयन के विषय पर जो कार्यवाही हमें करनी थी हमने की, शासन का पूरा सहयोग मिला परन्तु इस विषय पर चिकित्सक अपनी उदासीनता नहीं छोड़ पाये जिससे लड़ाई में वह धार नहीं आ पा रही है परन्तु इन छोटी–छोटी बातों से हम कदाचित विचलित नहीं होते हैं अपितु यह तो हमें लड़ाई की नई दिशा तय करने की ऊर्जा प्रदान करते हैं, शिक्षा के क्षेत्र में हमने गुणात्मक परिवर्तन का जो संकल्प लिया था उसे काफ़ी हद तक प्रभावी बनाने का प्रयास किया है, मान्यता के लिये अन्य चिकित्सा पद्धतियों की भांति स्थापित मापदण्डों को फ़िलहाल लागू तो नहीं कर सकते हैं परन्तु उनके समकक्ष पहुँचने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया है पाठ्यक्रमों के उच्चीकरण का काम प्रारम्भ हो चुका है इसके लिये बोर्ड की पाठ्यक्रम समिति को दायित्व भी सौंपा जा चुका है, कुछ दिनों के अन्दर ही यह कमेटी अपनी रिपोर्ट हमें सौंप देगी, जिसपर हम और प्रबन्ध समिति सकारात्मक निर्णय लेगी। हमें इस बात का संतोष है कि छात्र संख्या के सम्बन्ध में हमने जो लक्ष्य निर्धारित किया था उसे पूरा तो नहीं कर सके परन्तु लक्ष्य के आस पास हैं।

यह सारी बातें हमें कार्य करने की प्रेरणा देती हैं परेशानियां और समस्यायें तो आती ही रहती हैं और उनके समाधान भी हमें ही खोजने होते हैं मुझे नहीं समझ में आता है कि दुनिया में ऐसी कोई समस्या हो जिसका समाधान न हुआ हो, वर्ष 2016 में आरोपों और प्रत्यारोपों का दौर भी चला लेकिन हम इन सबसे बेख़बर होते हुए अपने काम में लगे रहे हमारे कुछ साथियों ने बोर्ड की अधिकारिता पर ही प्रश्नचिन्ह लगाने का प्रयास किया हर तरह के कुचक्र रचे, कुटनीतिक चालें चलीं परन्तु सत्य कभी पराजित नहीं होता है, कष्ट अवश्य हुआ लेकिन जो परिणाम आये वह कुचक्र रचने वालों के मुहँ पर करारा तमांचा था।

> **लक्ष्य पाना प्राथमिकता**
> **हर स्तर पर होंगे प्रयास**
> **निर्णयों की होगी समीक्षा**
> **आन्दोलन का स्वरुप बदलेगा**
> **अनिश्चितता का कोई स्थान नहीं**
> **परिणाम से कम पर नहीं समझौता**
> **चिकित्सकों का सम्मान ज़िन्दा रहेगा**

4 जनवरी 2012 को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिए पारित आदेश के सन्दर्भ में भी भ्रान्तियां फैलायी गयीं पश्चिम के हमारे कुछ साथियों ने चन्द ज़िला स्तर के अधिकारियों से सांठगांठ करके एक नई दिशा व नई अधिकारिता निर्मित करने का प्रयास किया और इसका दुष्प्रचार भी खूब किया यह सूचना जैसे ही हमें प्राप्त हुई अविचलित भाव से हमने पूरे सन्दर्भ का गम्भीरता से अध्ययन किया और उसपर कार्यवाही की, हमारे एक ही पत्र ने अधिकारियों को सही रास्ते पर ला दिया और जो सत्य था उसे स्थापित किया।

इस तरह की लड़ाईयां लड़ते हुए हमें आगे बढ़ना है और लक्ष्य प्राप्त करना है । डा0 इदरीसी ने कहा कि वर्ष 2016 ज़्यादा उठापटक वाला नहीं रहा, जो जहां, जैसे था धीरे–धीरे कार्य करता रहा परन्तु जो अपेक्षा हमने की थीं उसकी प्राप्ति नहीं हुई ख़ैर यह कोई चिन्ता की बात नहीं है लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं और उनतक पहुंचने का पूरा प्रयास किया जाता है और यदि इन प्रयासों से 50 प्रतिशत से ज़्यादा सफ़लता मिल जाये तो इसे लक्ष्य प्राप्ति ही मानना चाहिये।

चूंकि हमारी संस्था उत्तर प्रदेश आधारित है, शिक्षण और प्रशिक्षण का कार्य विधि सम्मत ढंग से बोर्ड उत्तर प्रदेश में ही करता है और यह प्रयास करता है कि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से सम्बन्धित जितने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक इन्सटीटयूट व स्टडी सेन्टर संचालित हो रहे हैं वह अपना कार्य सुचारू रूप से करें और छात्रों को ऐसी शिक्षा दें जिससे कि वह समाज में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास कर सकें अब वस्तुतः वह समय आ गया है जब कार्य पर ज़ोर देना होगा कभी–कभी हमें कष्ट होता है कि आज़ादी के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की तरह कई अन्य पद्धतियां मान्यता के लिए पंक्ति में थीं उनको तो मान्यता मिल गयी लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता नहीं मिल पायी, इसके लिए प्रयास भी किये गये हैं लेकिन सरकार की तरफ़ से जो कदम उठाये जाने चाहिये वह उठाये तो गये हैं लेकिन पर्याप्त नहीं है। उत्तर प्रदेश में अभी बहुत कार्य करना है हम चिकित्सकों का आवाहन करते हैं कि जितना प्रयास हम कर रहे हैं वह सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करते हुए हमें कार्य का सहयोग दें, हमने हर चिकित्सक से अपेक्षा की थी और यह निर्देश भी दिया था कि प्रदेश में विधि सम्मत ढंग से चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए प्रदेश में स्थापित नियमों का पालन करना होगा इसलिए प्रत्येक चिकित्सक को अपने पंजीयन का आवेदन अपने ज़िले के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में कराना होगा।

यह सन्देश हर चिकित्सक तक पहुंचे इसके लिए हमने प्रचार के हर माध्यम का प्रयोग किया, जितना हमसे सम्भव हो पाया वह प्रयास किये गये और आज भी किये जा रहे हैं

शेष पेज तीन पर

औषधि निमार्ण की बहुलता ख़तरे की घण्टी

किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास की कल्पना उसकी औषधियों की खपत पर निर्भर करती है क्योंकि औषधियों का प्रयोग जितना अधिक होगा जनता तक उस पद्धति की पहुँच उतनी ही होगी, कारण औषधि और उसके गुण से ही पद्धति की उपयोगिता सिद्ध होती है जितनी चिकित्सा पद्धतियां वर्तमान में प्रचलित हैं उन सभी के पीछे उनकी गुणवत्ता है गुणवत्तायुक्त औषधियां जब रोगी व्यवहार में लाता है और उससे लाभ प्राप्त करता है तब निश्चित रुप से रोगी स्वयं और उससे जुड़े व्यक्ति उस पद्धति से प्रभावित होते हैं और जिसका परिणाम यह होता है कि उस चिकित्सा पद्धति का जनाधार बढ़ता है और जन सामान्य के बीच उस चिकित्सा पद्धति की लोकप्रियता बढ़ती है जिसका सीधा लाभ चिकित्सकों के साथ साथ औषधि निर्माताओं को भी मिलता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति डेढ़ सौ वर्षों से इस देश में प्रचलित है वर्तमान में लाखों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं और पूरा प्रयास कर रहे हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी जन–जन तक पहुँचे, औषधियों की जो समस्या आज से 10 वर्ष पूर्व थी वह पूरी तौर पर समाप्त हो चुकी है मात्र एक या दो कम्पनियों पर आश्रय की स्थिति समाप्त हो चुकी है यह अच्छी बात है, चिकित्सकों तक औषधियां पहुंच रही हैं हर दवा निर्माता अपनी औषधियों को सर्वश्रेष्ठ होने का दावा करती हैं हमारी इन दवा निर्माण इकाइयों ने समय और मांग के अनुरूप औषधियों के स्वरूप में परिवर्तन भी किया है पारम्परिक औषधियों के साथ पेटेन्ट औषधियों का निमार्ण भी किया गया है, रोगी औषधियों को आसानी से व्यवहार में ला सके इस उद्देश्य से टेबलेट व कैप्सूल फार्म में भी औषधियां लाई गयी हैं जिससे की रोगी आसानी से इन औषधियों को प्रयोग में ले लेता है, पूरे देश में वर्तमान में लगभग दो सैकड़ा से ज़्यादा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधि निर्माण इकाईयां स्थापित की जा चुकी हैं और हर कम्पनी का दावा है कि वह मांग और पूर्ति का संतुलन बनाये हुए हैं। यह सब सुनकर मन प्रसन्न होता है कि जो लोग कहते थे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्थाओं ने डा0 तो बना दिये लेकिन प्रैक्टिशनर नहीं तैयार किये

शेष पेज तीन पर

नया वर्ष – नई सम्भावनायें

नया वर्ष का आगमन हो चुका है हम सभी इस नये नवेले वर्ष का स्वागत भी कर चुके हैं, यह कोई नई बात नहीं है, प्रत्येक 365 दिवसों के बाद परिवर्तन होता रहा है, होता रहेगा और नये वर्ष इसी प्रकार आते–जाते रहेंगे, यह क्रम तबसे जारी है जबसे ईसा वर्ष प्रचलन में आया। नये वर्ष का आना–जाना इस बात का द्योतक होता है कि इन निश्चित 365 दिनों में जिसे हम वर्ष का नाम देते हैं अपनी प्रथमिकतायें तय करते हैं और उन्हीं बिन्दुओं पर कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी प्राथमिकतायें तय होती हैं, संकल्प लिये जाते हैं और परिणामों की प्रतीक्षा की जाती है, इस आने व जाने में हम अपनी उपलब्धियां भी देखते हैं, होना तो यह चाहिये कि जो कुछ भी हमें इस वर्ष किन्हीं कारणों से प्राप्त नहीं हुआ है वह इस नये वर्ष में प्राप्त हो जाये, देखा जाये तो गत वर्ष हमें क्या नहीं मिला इस विषय पर हमें विचार नहीं करना चाहिये क्योंकि जो कुछ भी हमने इच्छा की है वह हमें मिल ही जाये यह आवश्यक नहीं होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विडम्बना है कि आज तक इच्छित वस्तु नहीं प्राप्त हो पाई है, इसके गुण–दोषों पर न जाकर केवल कार्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जो वर्ष गुजर गया वह हमें कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं दे गया है परन्तु संतोष की बात यह है कि यदि लाभ नहीं हुआ तो हानि भी नहीं हुई। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो यही अर्थ निकल कर आता है कि वर्ष 2016 इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बड़ी शान्ति के साथ गुज़र गया, न कोई धमाका हुआ, न कोई गति अवरोध, किसी तरह से हम सब ने 365 दिनों की एक शान्त यात्रा और पार कर ली, परन्तु भविष्य को दृष्टिगत रखते हुये गुज़रे वर्ष से हमें यह सीख लेनी चाहिये कि बहुत अधिक खामोशी भी कभी–कभी ठीक नहीं हुआ करती है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी वह चिकित्सा पद्धति है जिसे स्थापित होने के लिये बहुत लम्बी यात्रा तय करनी है, इस यात्रा को पूर्ण करने में कई पड़ाव भी हमारे सामने आयेंगे इन पड़ावों को पार करते हुये ही हम सफ़लता का स्वाद चख सकते हैं, सफ़लता जब बहुत दिनों तक नहीं मिलती है तब निराशा का जन्म लेना स्वाभाविक है, अस्तु , किन्तु , परन्तु की भावना से ऊपर उठकर केवल कार्य के लिये कार्य करना होगा, वर्षों के आने व जाने का क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक सृष्टि है लेकिन हमें यदि वास्तविक परिणामों की आवश्यकता है तो इस क्रम को तोड़ना ही होगा, अब प्रश्न यह उठता है कि यह निरन्तर चलने वाला क्रम कैसे तोड़ा जाये ?

समय की गति और वर्ष की अवधि को तोड़ना तो हमारे वश में नहीं है परन्तु इस निश्चित अवधि में हमें अपनी खामोशी तो तोड़नी ही पड़ेगी यदि हम इस खामोशी को नहीं तोड़ पाते तो अच्छे परिणामों की इच्छा करना बन्द कर दें, मात्र कामनाओं से काम नहीं हुआ करते हैं, कामनाओं की पूर्ति के लिये संकल्पबद्धता के साथ कार्य करने होंगे अन्यथः वर्ष पर वर्ष यूँही बीतते जायेंगे और परिणाम वही होंगे जो अभी तक आपके सामने आ रहे हैं। गतिशीलता नहीं होना ही हमारे स्थिरता का प्रतिबिम्ब है अन्य पद्धतियां कहाँ से कहाँ पहुँच गयीं और इलेक्ट्रो होम्योपैथी है जो अभी भी स्थापित होने के लिये संघर्षरत है, व्यवस्थाओं में तो कोई कमी नहीं है परन्तु जो हमारे प्रयास हैं वह इसलिये सफल नहीं हो पा रहें हैं क्योंकि हमारे प्रयासों में एकरुपता नहीं झलकती है, सदैव एक दूसरे के प्रति अविश्वास का भाव बना रहता है, श्रद्धा तो है परन्तु समर्पण की कमी है– संकल्प तो है परन्तु संकल्प साकार करने की भावना लुप्त है यही सब वह कारण हैं जो हमें फलीभूत नहीं होने देते हैं निरन्तरता का जो आभाव है उसे दूर करना पड़ेगा, यह सबकुछ तभी सम्भव है जब हमारे मन में विशवास होगा, धीरे–धीरे हम सफ़लता के मार्ग पर प्रशस्त होंगे इसी भावना के साथ हमें स्वंय व अपने ईष्ट मित्रों को इस बात के लिये प्रेरित करना होगा कि सतत प्रयासों से सफ़लता अवश्य मिलती है।

इसलिये गुज़री हुई बातों को भूलकर इस नये वर्ष में नई ऊर्जा, नई उमंग से लबरेज़ होकर एक नई पारी खेलने के लिये तैयार हो जायें। प्रति क्षण, प्रति पल कुछ न कुछ सदैव नया होता रहता है परन्तु यह नया तभी स्थिर रह पाता है जब हम संकल्पित भाव से कार्य करते हैं। नव वर्ष आप सभी को मंगलमय हो।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का स्वरुप नये साल में कैसा हो ?

नया साल, नये इरादे, नई व्यवस्थायें सबकुछ नया–नया इस खुशनुमा वातवरण में हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने नये वर्ष का बढ़–चढ़ कर स्वागत किया और प्रभु से यह कामना की कि हे प्रभु ! यह वर्ष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परिवार के लिये सुख समृद्धि और सौख्य को देने वाला हो परमात्मा हमारा यह निवेदन स्वीकार करे ऐसी हम सबकी कामना होती है, कई वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जड़ता सी आ गई है, इस जड़ता को समाप्त करने के लिये हम सबको सामूहिक प्रयास करने चाहिये, ऐसा नहीं है कि प्रयास नहीं हो रहे हैं लेकिन जो प्रयास कायदे से होने चाहिये वह कदाचित नहीं हो पा रहे हैं, प्रयास में गतिशीलता लाने के लिये हमें नये प्रयास करने चाहिये। लगभग 150 वर्षों से प्रचलित इस चिकित्सा पद्धति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है ऐसी बात नही है। लेकिन जो परिवर्तन होने चाहिये वह आज तक नहीं हुए जो एक नई व्यवस्था को जन्म देते जिससे इस चिकित्सा पद्धति का वास्तविक विकास हो पाता। समय लगातार आगे बढ़ता जा रहा है साल दर साल गुज़रते जा रहे हैं कई पीढ़ियां गुज़र गयीं लेकिन जो सफलता मिलनी चाहिये वह नहीं मिल पा रही है, यदि हम इनके कारणों पर जाते हैं तो अनेकों कारण सामने आते हैं लेकिन अब वह समय आ गया है जब हमें सिर्फ़ उस कारण पर ज़्यादा ध्यान देना है जिससे कि सीधे सफ़लता मिले।

सन् 1975 के पहले तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी का संचालन जिस ढंग से होता रहा वह उस समय की परिस्थितियां थीं तत्काल की परिस्थितियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का संचालन एकाधिकार के रूप में किया गया, समय बदला शासन और सत्ता की व्यवस्थायें बदलीं चिकित्सा पद्धतियों के लिए नियम और कानून बनने लगे मान्यता और गैर मान्यता में अन्तर स्थापित किये जाने लगे और इसी दौर में ऐलोपैथी का बोलबाला बढ़ा, आयुर्वेद और यूनानी संक्रमण काल से गुज़रे होम्योपैथी का प्रचार हुआ नेचुरोपैथी, योगा और सिद्धा जैसी पद्धतियां भी चर्चा में आयीं रिग्पा का भी पादुर्भाव हुआ लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी जहाँ के तहाँ बनी रही, ऐसा नहीं की इस पद्धति में काम नहीं हुआ, काम भी हुआ लोगों के बीच इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पहुंचाने का प्रयास भी हुआ, परन्तु जो परिवर्तन होना चाहिये वही नहीं हुआ, अगर वह परिवर्तन हो गया होता तो शायद आज स्थिति कुछ और होती जो गुज़रा सो गुजरा हमें वर्तमान परिस्थितियों में जीना है और जो सामने है उसे स्वीकार करना है परन्तु यह भी मानना पड़ेगा कि अब वह समय नहीं बचा जब कि हम ऐन केन प्रकारेण अपना काम चलायें।

यदि अब ज़िन्दा रहना है और अन्य पद्धतियों का मुकाबला करना है तो उनके बराबर यदि नहीं तो कोई न कोई स्तर तय करना होगा। परिस्थितियां बदल रही हैं और बदली हुई परिस्थितियों में शासकीय संरक्षण के आवरण की बहुत आवश्यकता है। पहले हमारे साथी न्यायालयों में जाकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए गुहार लगाते थे और स्थगन आदेश पा कर प्रसन्न होते थे लेकिन जब परिणाम आने लगे तो बहुत सारे साथी मैदान से दूर हो गये।

आज स्थिति यह है कि इस संघर्ष में लोग तो हैं लेकिन जो भावनायें होनी चाहिये वह लुप्तप्राय है, निराशा इस कदर हावी है कि जो वर्षों से इस क्षेत्र में लगे हैं उनके भी कंधे झुकने लगे हैं, उनको शायद ऐसा लगने लगा है कि अब परिवर्तन नहीं होगा यह हताशा किसी भी तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए ठीक नहीं है, हम सब को इससे ऊपर उठना होगा अगर इस हताशा से ऊपर नहीं उठे तो आगे की लड़ाई कैसे लड़ी जायेगी ?अब लड़ाई में न तो कोई पेंच है और न ही कोई जटिलता, सिर्फ़ अपने पराये का भेद छोड़कर सिर्फ़ और सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए यदि कार्य किया जाये तो असम्भव जैसा शब्द दूर–दूर तक दृष्टिगोचर नहीं होगा।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार द्वारा 21 जून, 2011 को एक आदेश जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान की राह आसान कर दी है और प्रदेश स्तर पर 4 जनवरी, 2012 को उ0प्र0 सरकार द्वारा भी शासनादेश जारी किया जा चुका है, यह इस बात का प्रमाण है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण प्राप्त हो चुका है कार्य करने के सारे संवैधानिक अधिकार भी मिल चुके हैं। ज़रूरत है तो बस हमारे साथियों को मज़बूत मनास्थिति के साथ कार्य करने की, आदेश को लगभग 5 वर्ष बीत चुके हैं लेकिन हमारे लोगों के द्वारा अभी तक इस आदेश का पूरा उपभोग और उपयोग नहीं किया जा सका सामान्य चिकित्सक की क्या बात कहें जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संस्था संचालक रहे हैं उनके अन्दर भी इस कदर निराशा जन्म ले चुकी है जिससे ऐसा लगने लगता है कि उनकी कार्य करने की इच्छा मर चुकी है ! सिर्फ़ दिखावे के लिए कार्य के दर्शन करवाते हैं, पिछले दिनों एक वरिष्ठ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालक से इलेक्ट्रो होम्योपैथी विषय पर संक्षिप्त वार्ता हुई तो उन्होने उत्तर दिया आप के अलावा कौन चल रहा है ! कोई और होता तो यह उसके लिए प्रसन्नता का विषय होता, लेकिन हमारा दृष्टिकोंण व्यक्तिगत न होकर सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए है इसलिए कष्ट हुआ। क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी व्यक्ति विशेष या संस्था विशेष की वस्तु नहीं है, इसके विकास के लिये हम सबका दायित्व है सामुहिक प्रयासों से सफ़लता मिलती है, प्रर्थकता भिन्नता को जन्म देती है, इसलिए इस भेद से ऊपर उठकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य करें ज़्यादा समय नष्ट नहीं करना चाहिये। आज की परिस्थितियां आप के पक्ष में हैं शासन और सत्ता का सहयोग व समर्थन भी है इसलिए इस अवसर का उपभोग करते हुए विकास की नई इबारत लिखें नये वर्ष में हम सब प्रवेश कर चुके हैं इसलिए हमें अपनी प्राथमिकतायें तय करनी होंगी और उन्हीं पर कार्य करते हुए इस नये साल का एजेन्डा तय करना है, मान्यता पाने के लिए जो भी आवश्यक व्यवस्थायें हैं हमें उनपर वास्तविक कार्य करने हैं पिछले वर्षों में जो भी कुछ किया गया उनके परिणाम से सबक सीखते हुए यह ढूंढना होगा कि कमियां कहाँ हैं ?और यह भी विचार करना होगा कि मान्यता पाने के लिए हम जो लड़ाई जिस ढंग से लड़ रहे हैं क्या वही तरीका उचित है ? या उसमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है। अच्छा तो होता इस महत्वपूर्ण विषय पर पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शीर्ष लोग एक साथ बैठकर पुर्नविचार करते और ऐसी कोई सशक्त रणनीति तैयार करते जो कि सफ़लता के लिए फिट बैठती हो इसमें अधिकार और अनाधिकार के विचार को त्यागकर सिर्फ़ चिकित्सा पद्धति के लिए चिन्तन करना होगा।

पिछले अंक में हमने लिखा था कि मान्यता के लिए नये सिरे से विचार होना चाहिये हमारे इस विचार पर सब की एक राय होनी चाहिये यह आवश्यक नहीं है कि सब लोग हमारे विचार से सहमत हों लेकिन सामुहिक विचार तो आने ही चाहिये इन्हीं सामुहिक विचारों से ऐसा विचार निकलेगा जो शायद सर्वमान्य हो, सम्भव है कि सर्वमान्य न हो, परन्तु यदि अधिकांश लोगों का मत एक विचार पर हो उसपर कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये, समय जो बढ़ेगा व्यवस्थायें बदलती जायेंगी और कहीं ऐसा न हो हम ऐसी परिस्थितियों को जन्म दे दें जिसका मुकाबला हमारे साथी स्वयं न कर पायें रिग्पा चिकित्सा पद्धति की मान्यता किन परिस्थितियों में मिली है इस विषय पर गम्भीरता से चिन्तन करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के बारे में चिन्तन करना होगा इस नववर्ष के सुप्रभात में हम अपने सभी साथियों से निवेदन करते हैं कि आइये कि कुछ नया करें नये लोगों को जोड़ें नयी ऊर्जा को जन्म दें जड़ता को समाप्त कर उत्साह को जन्म दें और इस नूतन वर्ष में नूतन उपलब्धि की कामना करें।

आन्दोलनों को नया मोड़ देना होगा

इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक आन्दोलन है और इस आन्दोलन को गति देने के लिए लगातार 50 वर्षों से आन्दोलन चलाये जा रहे हैं इन्हीं आन्दोलनों का परिणाम है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति दिनों दिन मज़बूत से मज़बूततर होती जा रही है लेकिन अन्तिम पर्णित को नहीं प्राप्त हो पा रही है, फलस्वरूप आन्दोलन को वह गति नहीं मिल पा रही है जो मिलनी चाहिये समानतयः जब आन्दोलन की बात होती है तो लोग उसका अर्थ धरना, प्रर्दशन या किसी अन्य व्यवस्था से लगा लेते हैं लेकिन हम आपको बता दें कि आन्दोलन दो तरह के होते हैं एक रचनात्मक आन्दोलन और दूसरा विध्वान्शात्मक आन्दोलन दोनों ही आन्दोलनों का स्वरूप अलग–अलग होता है और हर आन्दोलन की अपनी अलग आवश्यकता होती है।

जिस समय पर जिस स्वरूप की आवश्यकता हो उस समय आन्दोलन को उस शक्ल में ढाल देना ही बुद्धिमानी होती है, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चिकित्सा पद्धति है, इससे जुड़े हर व्यक्ति को चिकित्सक का नाम दिया जाता है, चिकित्सक समाज में आज भी सम्मानीय है, आज भी उसका अलग स्थान है, उसकी अपनी अलग मर्यादा है और समाज का हर व्यक्ति चिकित्सक से उग्रता के स्थान पर साम्यता का व्यवहार चाहता है इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी में रचनात्मक आन्दोलनों की आवश्यकता है। यह बात अलग है कि जब हमारी उपेक्षा ही होती रहे तो ध्यानाकर्षण के लिए धरना या प्रर्दशनों के प्रतीक स्वरूप का प्रयोग करना चाहिये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए जन साधारण के मध्य अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए आन्दोलन चलाये जाते रहे हैं आन्दोलनों की शुरूआत स्व0 डा0 एन0 एल0 सिन्हा ने प्रारम्भ की थी।

जब सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लगातार उपेक्षा की तब उन्होंने अनशन के माध्यम से स्थानीय प्रशासन का ध्यान शान्ति तरीके से अपनी तरफ़ खींचा और सरकार को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह उनकी बात सुने, यह अलग बात है कि सरकार ने उनके दावों की परीक्षा की और परीक्षणोंपरान्त जो परिणाम आये वह सुःखद रहे और 27 मार्च, 1953 के अर्धशासकीय पत्र के रूप में फलीभूति हुए यह तो उस समय की बात थी जब डा0 सिन्हा इतने से ही संतुष्ट हो गये अगर उस समय उन्होंने और प्रयास कर लिये होते तो शायद आज स्थिति कुछ भिन्न होती लेकिन दूसरा पक्ष यह भी कहता है कि नियति को जो कुछ स्वीकार होता है वही सामने आता है यदि वह सबकुछ कर गये होते तो यह पीढ़ी क्या करती ?उन्होंने जो किया उसका श्रेय उन्हें ही मिलना चाहिये सन् 1953 से लेकर सन् 1975 तक आन्दोलन शान्त रहा।

सन् 1975 में एक नया आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और वह आन्दोलन था इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा को नीति संगत बनाना यह एक नये युग का सूत्रपात्र था यह आन्दोलन ख़ूब फलाफूला विधि सम्मत ढंग से विद्यालयीय पद्धति पर कार्य प्रारम्भ हुआ इस आन्दोलन ने एक ज़िले से प्रारम्भ होकर पूरे देश में स्थान बनाया, जब विद्यालयीय पद्धति शुरू हुई तो छात्र संख्या भी खूब बढ़ी, साहित्य की मांग बढ़ी, मांग को देखते हुए नये–नये लेखक निकलकर सामने आये और उन्होंने अपनी प्रतिभा का बख़ूबी प्रदर्शन किया जिससे कि छात्रों को नया और अच्छा साहित्य मिलने लगा, कहा जाता है कि जब प्रगति होती है तो लोगों की दृष्टि भी पड़ती है। नई सोच और नई व्यवस्थायें जन्म लेती हैं सरकार की दृष्टि भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर पड़ी सरकार ने इन बढ़ती हुई गति विधियों पर रोक लगाने के लिए कार्यवाईयां शुरू कीं। फलस्वरूप इलेक्ट्रो होम्योपैथों और सरकार के मध्य टकराव की स्थिति पैदा हुई, छात्र और चिकित्सक अब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुके थे, वह उग्र हुए और आन्दोलनकारी के रूप में सामने आये परिस्थितियां बदलीं सरकार को अपने रूखों में परिवर्तन करना पड़ा, हमारी संस्था प्रमुखों को न्यायालयों की शरण लेना पड़ा आन्दोलनों का ही परिणाम था कि माननीय दिल्ली हाईकोर्ट ने 18 नवम्बर, 1998 को वह एतिहासिक आदेश पारित किया जिसने कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति बदल करके रख दी, कोर्ट के आदेश को केन्द्र सरकार ने चुनौती दी लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी आदेश में परिवर्तन नहीं किया बढ़ती हुई छात्र संख्या व चिकित्सकों की भीड़ में सरकार को विवश कर दिया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मान्यता के विषय में वह विचार करे।

सरकार ने एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया जिसका परिणाम 25 नवम्बर, 2003 का पत्र निकला यह अलग बात है कि 25 नवम्बर 2003 के आदेश की गलत व्याख्या हुई जिससे कि एक नई स्थिति निर्मित हो गयी, 2004 से 2011 तक की चुप्पी के बाद एक बार पुनः आन्दोलन ने सिर उठाया लेकिन इस बार जो आन्दोलन था वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए था, काम करने के अधिकार मिल चुके हैं सिर्फ़ हमें इन अधिकारों को प्रयोग में लाना है अस्तु आन्दोलन को कार्य संस्कृति की दिशा में मोड़ देने का प्रयास करना होगा और जो परम्परागत सरकार पर दबाव बनाने का तरीका है उसके स्थान पर आन्दोलन को नया स्वरूप देना होगा क्योंकि सरकार लगातार आपके साथ है, आपके पास है, आपकी बातें सुन रही है, पर ज़रूरत है तो ऐसे कार्य की जिससे कि सरकार स्वयं प्रभावित हो, प्राईवेट मेम्बर बिल या सांसदो का समर्थन हमें लाभ तो देगा, लेकिन कितना ? यह कोई नहीं जानता समय कम है इसलिए हमें अपने आन्दोलन की दिशा बदलते हुए धार देनी है हम नये वर्ष में आप सबके सहयोग से ऐसा कर पायेंगे ऐसी अपेक्षा है सबका साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास का सपना हमें साकार करना है।

औषधि निमार्ण .... प्रथम पेज से आगे

औषधियों की यह खपत उन लोगों के प्रश्न का स्वयं उत्तर है।

जिस ढंग से औषधियां बन रही हैं और उनकी मांग बढ़ रही है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रगति की कहानी स्वयं कह रही हैं प्रगति करना बहुत अच्छी बात है लेकिन प्रगति के लिए कोई ऐसा रास्ता नहीं अपनाना चाहिये जो कि आगे चलकर कोई नया संकट खड़ा कर दे, पूरे देश में जिस तेज़ी के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों के निमार्ण की इकाईयां लगायी जा रही हैं वह एक नये संकट का संकेत दे रही हैं। संकट का तात्पर्य यह है कि वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों के निर्माण के लिए केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा कोई भी निगरानी इकाई गठित नहीं की गयी है जिसके कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी को किसी तरह का कोई लाइसेंस सरकार की तरफ़ से जारी नहीं किया जा रहा और न ही कोई औषधि निर्माण के लिए सरकारी मानक या सरकारी गाइड लाइन जारी की गयी है, इसके अभाव में हमारे औषधि निर्माता मनमानी कर रहे हैं न मानकों का भय, न लाइसेंस की चिन्ता, बेधड़क काम जारी है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया ही आधार है इसी फार्माकोपिया में इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों के निर्माण की विधि संरक्षित है, दूसरे शब्दों में जर्मन फार्माकोपिया ही आधार है, भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई अधिकारिक फार्माकोपिया नहीं है, पिछले वर्षों में एक फार्माकोपिया बाजार में लायी गयी थी जिसे भी बड़ी चतुराई से प्रस्तावित फार्माकोपिया का नाम दिया गया था, पुरानी कहावत है कि अति का अन्त होता है जिस प्रकार से अत्याधिक काउन्सिलों और बोर्डों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का बंटाधार किया था ठीक उसी प्रकार से आज औषधि के क्षेत्र में भी अतिरेक्ता के दर्शन हो रहे हैं। जो किसी भी तरह से उचित नहीं है डा0 मैटी द्वारा प्रतिपादित औषधि निर्माण विधि का खुल्लम खुल्ला मख़ौल उड़ाया जा रहा है पौधों के साथ भी छेड़ छाड़ की जा रही है कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्वनिर्मित वैज्ञानिक हर पौधे का विकल्प तैयार करने की बात करते हैं और इन्हीं विकल्प पौधों से गुणवत्तायुक्त औषधि निमार्ण का दावा करते हैं विकास के लिए नये प्रयोग हो यह अच्छी बात है लेकिन आधार को ही छोड़ दें तब तो नया निर्माण होता है पूराना कहाँ रहता है यदि सभी 113–115 पौधों का विकल्प तैयार हो जायेगा तो ऐसी औषधियां इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धति की नहीं किसी अन्य पद्धति का नाम ले सकती हैं अनुसंधान पुराने को हटाकर नया लाने की बात नहीं करता है बल्कि पुराने के रहते हुए नये में अधिक सम्भावनाओं की तलाश करता है यह तो समय सिद्ध करता है कि जो चीज़ उपयोगी है वही स्थिर रहती है अस्तु समय रहते हम सबको इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना होगा कि औषधि निर्माण के क्षेत्र में मची धमाचौकड़ी को कैसे रोका जाये ? लोगों को औषधियां भी मिलती रहें और चिकित्सा पद्धति का नुकसान भी न हो।

2017 में लक्ष्य पाना ..... प्रथम पेज से आगे

हर जनपद तक हमारे चिकित्सकों को सन्देश मिले इस उद्देश्य से बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने हर चिकित्सक को भली भांति अवगत कराने का प्रयास किया इसीलिए चिकित्सक अधिकारिता जागरूकता अभियान का श्रीगणेश किया गया, इस अभियान के अन्तर्गत मण्डल स्तर पर सभायें की गयी चिकित्सकों से सीधे संवाद स्थापित किया गया उनको जागरूक किया गया जहां जो भ्रांतियां थी उनको दूर करने का प्रयास किया गया चिकित्सकों में व्याप्त निराशा को दूर करने का यथा सम्भव प्रयास ही नहीं बल्कि पूर्ण रूप से समाधान करने का काम किया गया परन्तु इसमें हमें वह सफ़लता नहीं मिली, कारणो के तह में जाने के बाद जो कुछ सामने आता है वह हमें यही प्रेरित करता है कि अभी भी जमीनी स्तर तक कार्य करने की आवश्यकता है।

यदि हम यह कार्य संस्कृति प्रभावी कर पाये तो सफ़लता में कोई सन्देह नहीं है किसी भी कार्य को एक निश्चित समय के अन्दर पूरा हो जाना चाहिये क्योंकि सब्र की एक सीमा होती है और सीमायें टूटती हैं तो उनके परिणाम गम्भीर ही होते हैं अस्तु जितनी जल्दी हो हम सबको प्रयास करके लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जुट जाना चाहिये। डा0 इदरीसी ने आगे कहा कि हमारी दृष्टि मात्र उत्तर प्रदेश के लिए ही नहीं है हम इसे राष्ट्रीय स्तर पर फलतः फूलता देखना चाहते हैं। इस दिशा में भी हम काम कर रहे हैं भारत सरकार से हम लगातार पत्र व्यवहार कर रहे हैं और सकारात्मक दृष्टि के साथ आगे का रास्ता तय करने का प्रयास कर रहे हैं आज से साढे पाँच वर्ष पूर्व इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के प्रयासों से भारत सरकार ने 21 जून, 2011 को जो ऐतिहासिक आदेश पारित किया था वह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के इतिहास में मील का पत्थर है। इस ऐतिहासिक आदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन की तसवीर बदल कर रख दी है वर्षों के प्रयासों के बाद हमें जो मिला है वह संजो कर रखने के लिए नहीं मिला है परन्तु इस आदेश का जितना अधिक से अधिक प्रचार किया जाये वह अधिक से अधिक राज्यों में इस आदेश का अनुपालन करवाया जाये क्योंकि यह आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा व अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं इसलिए इस आदेश को प्रभावी बनाने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया प्रतिबद्ध है और यह उम्मीद करती है कि आने वाले महीने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए नई दिशा निर्धारित करेंगे, उत्तर प्रदेश सरकार की तरह ही केन्द्र सरकार भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई स्थायी और प्रभावी नीति निर्धारित कर देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों के साथ न्याय करेगी। अन्त में मैं अपने बोर्ड के सभी साथियों व पदाधिकारियों का हृदय से सम्मान करते हुए प्रदेश की सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों को नववर्ष की बधाई देता हूँ तथा यह उम्मीद करता हूँ कि पूर्व की भाँति सभी का सहयोग प्राप्त करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

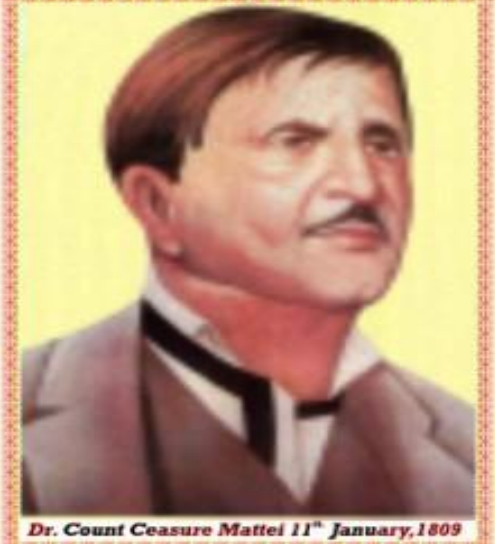

Dr. Count Ceasure Mattei 11th January,1809

Un forgettable dates

04 January	→	*Adhikar Diwas*
11 January	→	*Mattei Diwas*
24 April	→	*Board's Foundation Day*
21 June	→	*Vijay Diwas*
25 July	→	*EHMAI Foundation Day*
04 September	→	*Mattei Nirwan Diwas*
30 November	→	*Prerna Diwas*

(Dr. N.L. Sinha Jayanti)

Wish you all a happy and prosperous New Year 2017

MAY

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

JULY

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30